## ७९॥ भ्रम्भेष प्रमान्त्र मार्थि।



सहर्त्रपार्सी मार्थराञ्चराधियाप्तवरार्सी

## **७**९॥गर्डटॱॾॣॖॺॱपेॱमेश'मबट'र्सेदे'सर्हर'क्स'हैट'मसूर्या

गर्डट भ्रुक प्येमेश प्रवाद र्ये की क्षारा भ्रुवाश ये दिया वर्षे देवा पर्वे प्रवादी प्रवादी देवा भी भ्रुक या



ईस'यट अत्र हैं र माठेस मधुस द्वा प्रदामि प्रयोग भी मार्स र मोत्र से मार्थ से मार्य से मार्थ से मार्थ से मार्थ से मार्थ से मार्थ से मार्थ से मार्थ

\_\_\_\_\_ૼ૽૽ૼૼઽૄઌૄૼ૾ૹ૾ૼૼૼૼૼૺૺૹ૽૽૾ૼઽ૽ૹ૾૾ૼ૱ૹ૽ૼ૾ૺઌૹઽૢઽૹૢ

क्षॅं'सृ'है। इस'पर्नेन'पर्नेमनेगस'झन'ग्रै'ता। 5म'गसुस'नर'सेप'पर्5र'हेपे'ग्रुरा। ट्रैबायम् इटार्बेटार्बेबाग्य गुबा। ब्रेन्स्य ह्रिट्ये देन् मुवा। ग्रन्ति प्यम यम्'नकुर्'स्रुक्तकन्। भ्रेयासर्'र्'र्येर्, हर्समिन् र्रोस्मिया भ्रेर् चुर्'साम्याग्ना क्रियायास्ययाणी। वितयास्याधीयियास्य द्वारी स्वार्थिया दे स्वर्मियायहित हिन्यस्य है। र्दासक्रम्ययाकेरामी सुदे सुर्या यह हमे सर्रे रह्मा वर्षे हास वर्षे हास वर्षे हास वर्षे हास वर्षे हास वर्षे हास क्रिमार्था क्रीरामात्रदाना र्सुर्या। दे प्यदामा सुरुष्टा मार्था स्थापना सुरुष्टा स्थापना सुरुष्टा स्थापना सुरुष्टा स त्रा इमा बैया द्वी अरमानम्बर्या प्राप्ति। नेया देमा द्वारा स्वारा प्राप्ति। ह्री है ब्रेग'यदे क्रेंट'तरी। कृष्टेवटबाक्षिम्बेरक्टातरी। क्रिब्रग्य र्युक्रियायरी। र्सेन दुना धुना तु में पा पद्या में पा चुट चुट घु खु पद्या हु नट नग से सेना से र त्रा मुरुण्यामणमान्युं अत्र्रा मे स्टार्थर्थरः र्भेट्रा स्माख्रास्य वर्तेश्रायावर्गा क्षाराम्भे मेशा द्वार्षेषा स्थानुवासह्यामेटाणु वावर्गा यार्थमा भर्मामार्थर मुःश्चे राप्ता नक्ति स्वाप्त्राप्ता वार्षाप्ता वार्षे वार्षा प्रमारा क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया व चुलाचतु.बोटाची.पटी। क्षी.रामधारश्यास्त्रमाचू.पटी। क्षेटाबी.ब्रु.चे.सा.क्षेटात्टी। शावलाश र्वेन्यसम्यासप्त्रा त्रामिर्वेन्त्रत्येत्रासेन्यत्या सकेन्यवेन्यसकेन्यप्त्या छा तच्यान्यते,पुर्यं,तात्री। बातच्याक्षियायाः मुत्राक्षात्री। वह्यातच्यात्राः स् इ.भ.उट्टा। या.र इ.धु.झॅल.झॅट.उट्टा। त्र्.पूर्वाज्ञच.भ.बट.ाब्रेप्.उट्टा। भ.प्.व्.धु.ये. भूतु.चे.जु.जरी। भ.थे.व्या.कथ.विचा.चू.मी.मीजा.च.उरी। मू.मीअ.भ.ला.थे.भरुउ.परी। र. `ॸऀॺऻॱऄॺऻॱऄॣॱ८ॱढ़ड़ऻऻॱॾॣॺऻॱॿॖऀॱॺॖ॔ॱॺढ़ॱॺॖऀॱॺॱढ़ड़ऻऻॱॹ॔ॱक़ॱॹ॓ॱॵॱॸॗऀॺऻॱढ़ॿॺॱढ़ड़ऻऻ रबर्स्नाश्चरःश्चेरवरुर्वा नैयाकः सवर्स्नावर्वा र्नेट्नाखनाकु बनार्यवर्वा र्श्रासर्ह्य व्याप्ति । व्याप्ते स्वाप्ति । वया स्वाप्ति । व्याप्ते स्वाप्ति । व्याप्ति । व्याप्ति । व्याप्ति । मर्चमायद्या श्रायद्वागायामार्थ्याश्चेशायद्या क्षेत्राच्युच्यां मुत्रायद्वारा

त्रराजनार्रे भगत्रा गायेन वैयायते गान्येन स्थान स्थाने यहा यहा ने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स् गाक्तरमात्र्यायायत्।। सृक्षेत्रबद्यार्षमात्र्यायुष्यः। उत्तर्वात्यायाद्रमायायाय्या ह्रे॥ ह्यूयाक्केटान्गरार्थेयाचरुमायायन्॥ र्वतन्तर्मरार्थानुमायायन्॥ र्वतन्तर द्यर र्से अर्हे से प्रद्रा छ द्यार कु मैट रुया य प्रद्रा छर द्या प्रवेट मी रु र्क्या त्रा। भह्रम् म् म् मेन्यात्रा। मुक्तिनाम्बर्भायायदानेदाद्या क्षेष्ठात्य्वी यःषेगान्द्रायद्या वंषेगाकैन्द्रवैर्सेट्स्ययद्या दैस्यव्युस्सस्यर्भेयर्थेयद्या ह्ये हेशन्यस्य स्यापन्य महामारीस्याम्बिन्तुः पन्य विकेरास्य स्वापन्य त्रा। र्युःश्र्राःश्राम्पर्भाग्रेष्ट्य। नैटाक्यः ब्राम्यः सुल्या। स्र्वाःश्रेटा स्रुपः वि भ्रिमार्श्वायत्या मेटागुरुप्तात्याम् याम्यार्थायत्या भ्रियात्माराम् र्श्वायरमायायत्या गु गुवानमार्चा घटा कु वर्षा भूषा कर के समा भूषा वर्षा मार्थे के माणु द्या का के स र्ने'पर्मा ञ्ज्याब'हेया'बर'अपे'याट'स्'पर्मा च'य'गा'बे'ख्'ग्येपे'क्वेयांख्ट'पर्मा स्क्रिर' भुषात्रमाश्रमायद्या राम्भारायद्या र्नेटामाभ्रयायाम्हास्यायाम् बूर्ज्ञ भेंशतातरी। घटात्र्भारकार्याराधियाशतरी। जटाघटाद्रुधुःधैःयैवातरी। र्यर जमा श्रे जो जमा श्रें र पर्या है भेर कु मुंश मानेया या प्राणी माने अदे प्रयुग सु र.भर्म्.पर्या क्षेत्र.त.क्य.प्रजाव.मृ.पर्या र्ह्मि.य.प्रमायम्यायम् वात्रायम् र्झेशमशेर विमामविमासहमाप्ता नित्सित्रमाशेर मुः भुमासप्ता रूपा रूपा नित्सि य्यर्पायाया ह्रिन्यु सिराम्ये स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापियायायाया श्विट.ष्ट्रर.र.र्ज्याश्वयातात्या ज्ञान्यायायात्राम्बाचामात्या श्वामत्यायात्रास्या त्या घटात्रेयः इ.च.र्श्वाच्याच्या त्यमः संख्यार्चेट मी र्र्हेट त्या हेट के ने में ट भ्रुमार्चे सुमार्च त्रा र्श्वे के त्रार्च स्थार के भ्रिमार्च स्थार स्थार स्थार स्थार स्थार स्थार स्थार स्थार स र्यान्याम् साप्त्रा। द्रमः क्षेर्भ्यार्यासाराय्या सानेवाप्रहामा स्वा नित्रमे में मार्चर भ्रमा पर्या खास रमा प्रास्माय मार्थ सही। सक्ता के मार्च मार्च मार्च प

सत्त्रा। तत्रीट के दर्श्वट भूद सत्त्रा। घषासमामी ने पत्ता। यर या प्रकेशी क्टार्याचाय्त्रा। यद्यासुगारार्यासुयद्या ग्रीकायाम्यास्ट्रीयार्यायद्या १ क्षेत्रयामदानदे दुःस्यापद्या कुः श्रेष्ठा क्षेत्राक्षेत्रा स्यापद्या मार्थेत्रा श्रीको प्रेमा मार्थेत्रा ८८.५२।। श्रिम.क्र्यामध्यान्त्री.२.८८.५२।। यट.क्ट.शक्ट.५५४.५३मथ.त.५।। युग'रु'र्रेगब'ग्रुब'रु'व्रिय'व्रा बे'र्हेग'बेर'केर'केर मुव'बर्ब'व्रा ग्रेर'स्र भूरायासमें पठरायद्या दुमाशुटा द्वी क्षेत्रसमार्था युत्रामायुगमर्केरायद्या ज्ञेत्रा द्रणर संगि र्श्वेद प्रद्रा। बैर क्षणा खुमा केंब प्रवास सुप्रद्रा। या सुद में र्श्वेद मा हैब गा तर्या भूट. ह्या. तर्येन्न में नामुर. ये. तर्या ये. ची. ची. ची. में स्वी. तर्या स्वी. पूर्वा प्राप्त में ट. नुःर्शेगायायत्।। यानादर्गादर्गावयात्रुयायत्।। द्यायायात्रीयायत्।। र्मेदा र्भेशःश्वेतः नृतेः अर्गे 'र्ने 'प्र्या क्षे' न' खुग् केगा भेन' भेत 'र्ने पर्या कुर्मा भ्रूपः निते 'प्रमा' प तर्मि भ्रम्भाभाषीय प्रमास्त्री अनात्त्राचीतुः अकुः ५८ तर्मा चुः नटः स्रार्मिः अट्याष्ट्रस्य प्राप्त व्यापन क्षाप्त विष्या विषय । अड्डा स्था विष्या विषय । अड्डा स्था विष्या विषय । अड्डा स्था द्रमासु सेन तुस राष्ट्रा। पहस द्युटश हमाद सुस हैमाप्ट्रा। र्सेय मेंटा सुर् ख्रियाम् इ.प्रमा त्या ती ती कार्य क्षेत्र की कार्य की स्थापनी कार्य की स्थापनी है ए स्टा त्रा र्त्यार्भे भे मे सम्मानुयात्रा मुंडुग र नमेट अटर त्रा नर्र रेमाटग नुर्भायन नरेग्यायन्।। यार्ने व्यात्रीक्षासु वन्।। सुर्खार्से सुर्धार्यासु मैटावन्।। सुर्धार्स पष्णम्यायस्मायप्त्रा। मारुः द्वां है स्रोर्ट्यायस्मायप्त्रा। स्वयः रुः द्वां है स्रा <u>नश्रेम्बरप्त्या क्षेत्रुटार्क्केक्प्त्रम्पत्या प्रानम्भारानम्भेप्त्या राक्प्रार</u> <u>चर्चेमा मापर्या व्यार्ख्य वया चर्च मेया चु पर्या अर्क्व र्ख्य र्ह्मे कार्य पर्या हे हे या </u> यभ्राताः भूषाभारतिः भूषः भूषाभाषाः स्टाः भूषे भूषाः कषाभाषाभाष्ट्रास्य भूषः स्थापिष्ट्रा तर्रियं भेर्ष्ट्रियत्रेयः भागीत्। रेर्प्यालु हेशकुश्याप्य । श्चेश्याप्य प्राप्त मुषाया इसवा। बुराधायर सेवायेंदे लया सुरादरा। नै र्ह्स वेंग्यायवा द्युदायर तक्ता। वर्रे न्रेशर्मे प्रश्नायम् वर्षाम्य वर्षा। अस्मायशर्देव कर्मे म्यायस्था

( पश्चयारेमानु पर्वे आपना सुर्धे अप्या)